मिशन शिक्षण संवाद

सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें

मिशन शिक्षण संवाद

मिशन शिक्षण संवाद

सवतंत्रता संग्राम सेनानियों की शौर्य गाथा

शहीदों की चिताओं पर, लगेंगे हर बरस मेले |
वतन पर मरने वालों का, यही बाकी निशां होगा |

अपनी बात

राष्ट्र को सर्वोपरि समझते हुए भारत माँ की आजादी के लिए प्राणों को न्योछावर करने वाले भारत माँ के सच्चे सपूत और वीरांगनाओं की शौर्य गाथा से बच्चे परिचित हो सकें और राष्ट्र के भावी कर्णधारों में राष्ट्रीयता का भाव रग-रग में समाहित हो। इसी उद्देश्य से यह 'शौर्य गाथा' का संकलन आप सब के समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है।

धन्यवाद!

संकलनकर्ता

अजय सिंह (स. अ.)
प्राथमिक विद्यालय गजोधरपुर
विकास क्षेत्र- सिधौली
जनपद- सीतापुर

रूपरेखांकन
ज्ञान प्रकाश, प्र.अ. प्रा.वि. जैतपुर फफूंद, औरैया

संकलनकर्ता-अजय सिंह (सहायक अध्यापक), प्राथमिक विद्यालय गजोधरपुर, विकास क्षेत्र- सिधौली, जनपद- सीतापुर(उ०प्र०)

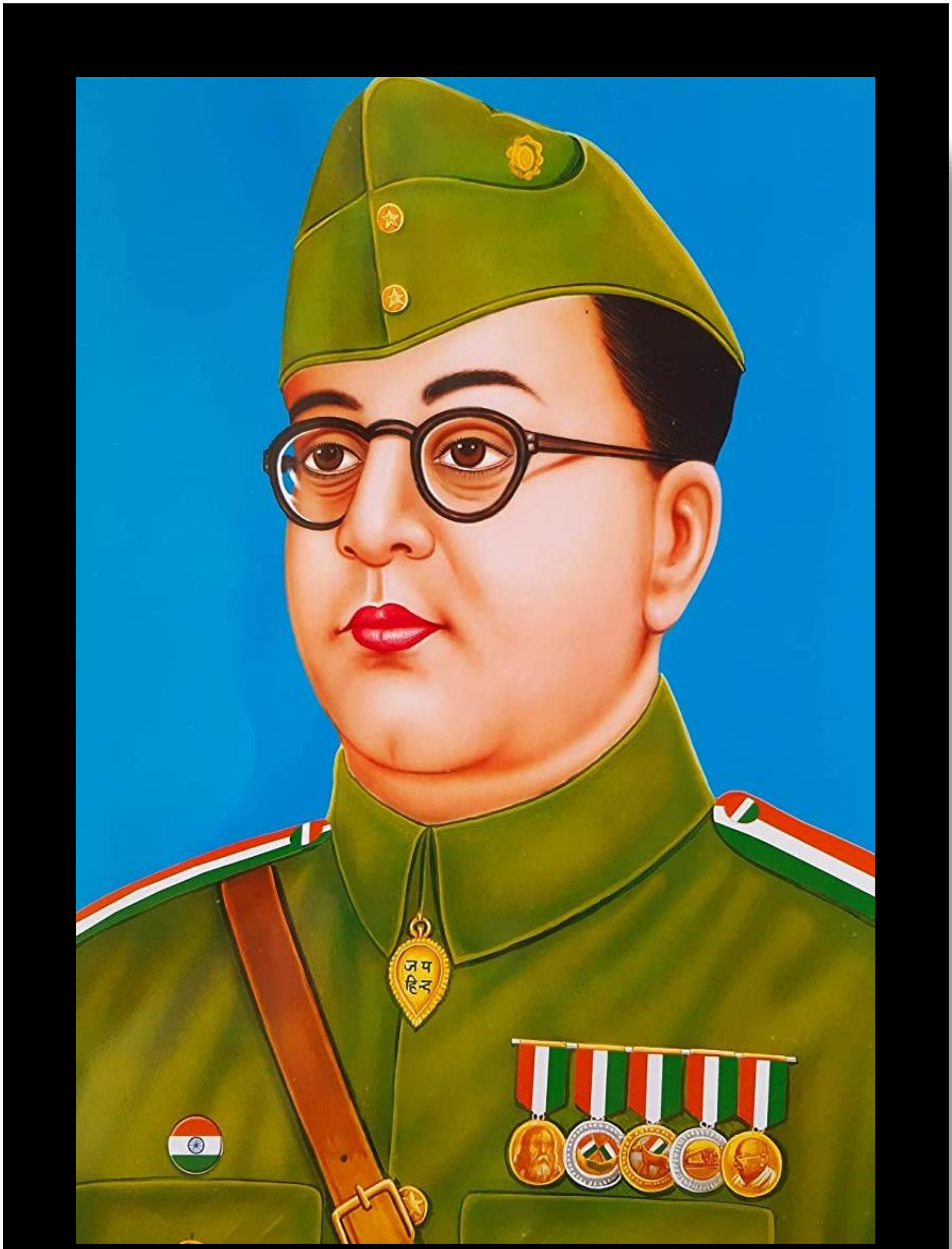

सुभाषचंद्र बोस

संकलनकर्ता-अजय शिंह (सहायक अध्यापक), प्राथमिक विद्यालय गजोधरपुर, विकास क्षेत्र- सिधौली, जनपद-सीतापुर(उ०प्र०)

सुभाषचंद्र बोस

(संक्षिप्त जीवन परिचय)

अनमोल कथन-"याद रखिए सबसे बड़ा अपराध अन्याय सहना और गलत के साथ समझौता करना है।"

नेता जी सुभाषचंद्र बोस के जन्म 23 जनवरी 1897 को उड़ीसा में कटक के एक सम्पन्न बंगाली परिवार में हुआ था।इनके पिताजी का नाम जानकीनाथ बोस और माता का नाम प्रभावती था।

नेता जी ने अपनी प्रारंभिक पढ़ाई कटक के रेवेशॉव कॉलेजिस्ट स्कूल में हुई।तत्पश्चात इनकी शिक्षा कलकत्ता के प्रेसिडेंसी कॉलेज और स्कॉटिश चर्च कॉलेज से हुई और बाद में भारतीय प्रशासनिक सेवा(इंडियन सिविल सर्विस)की तैयारी के लिए इनके माता-पिता ने बोस को इंग्लैंड के कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय भेजा।अंग्रेजी शासनकाल में भारतीयों के लिए सिविल सर्विस में जाना बहुत कठिन था। किन्तु इन्होंने इंडियन सिविल सर्विस की परीक्षा में चौथा स्थान प्राप्त किया । परन्तु भारत माता को आजाद कराने हेतु नौकरी नहीं की।

सक्रिय राजनीति में आने से पहले नेता जी ने पूरी दुनिया का भ्रमण किया ।ये 1933 से 1936 तक यूरोप में रहे।सुभाषचन्द्र बोस ने 1937 मेंअपनी सेक्रेटरी आस्ट्रियन युवती एमिली से शादी कर ली।

नेता जी ने देश की आजादी के लिए कई काम किए।1943 में जर्मनी छोड़कर जापान और जापान से सिंगापुर पहुँचे ,जहाँ इन्होंने कैप्टन मोहन सिंह द्वारा स्थापित आजाद हिंद फौज की कमान अपने हाथों में ले ली।उस वक्त रास बिहारी बोस आजाद हिंद फौज के नेता थे।नेता जी ने आजाद हिंद फौज का पुनर्गठन किया।महिलाओं के लिए रानीझांसी रेजिमेंट का भी गठन किया।जिसकी कैप्टन लक्ष्मी सहगल बनीं।

नेता जी अपनी आजाद हिंद फौज के साथ 4 जुलाई 1944 की वर्मा पहुँचे।यहीं पर इन्होंने अपना प्रसिद्ध नारा 'तुम मुझे खून दो,मैं तुम्हे आजादी दूँगा' दिया।

18 अगस्त 1945 को टोक्यो(जापान) जाते समय ताईवान के पास नेताजी के एक हवाई दुर्घटना में निधन हुआ बताया जाता है,लेकिन उनका शव नहीं मिल पाया।नेता जी के मौत के कारणों पर आज भी विवाद बना हुआ है।

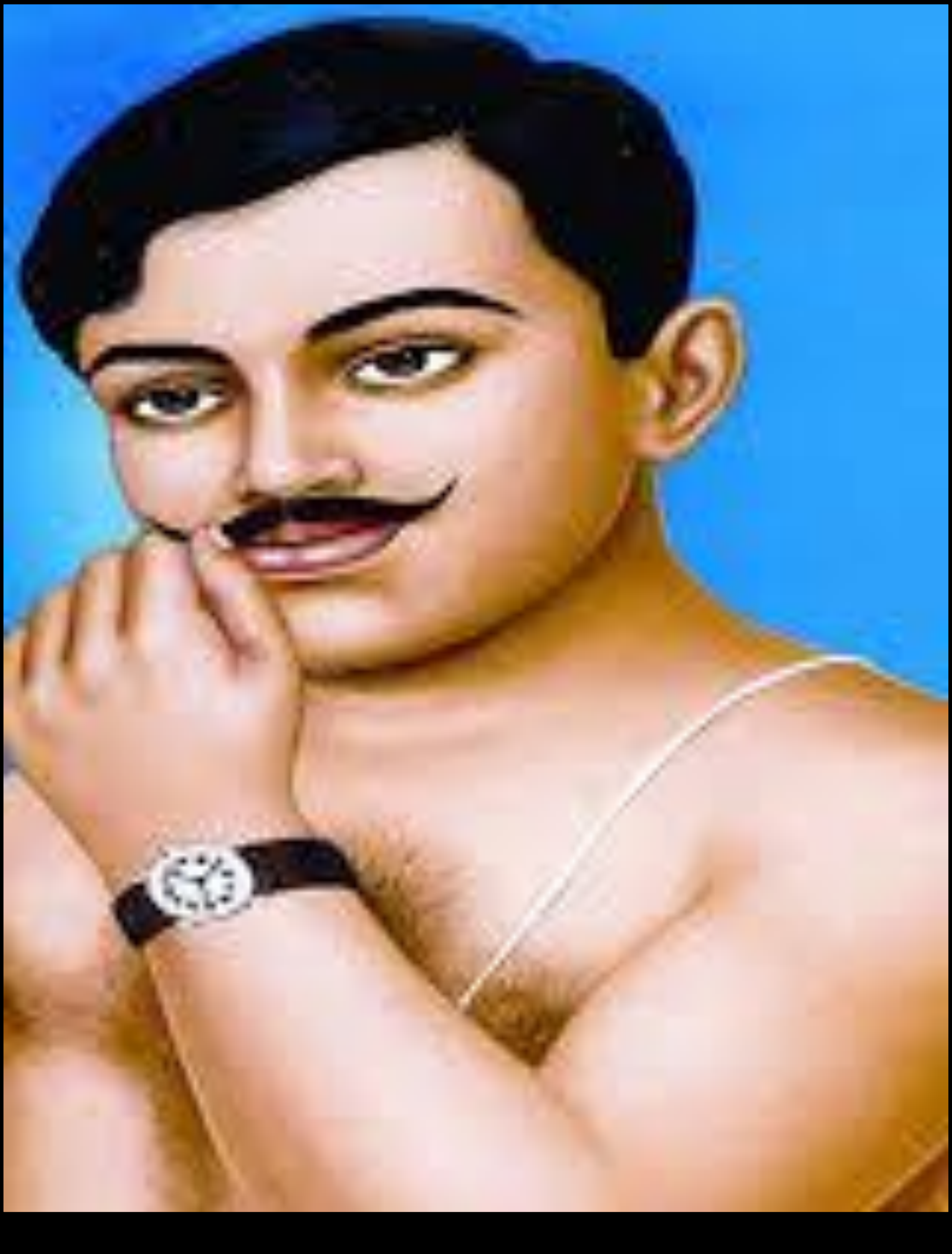

चन्द्रशेखर आजाद

चन्द्रशेखर आजाद

(संक्षिप्त जीवन परिचय)

अनमोल कथन- "आप हर दिन दूसरों को अपने रिकॉर्ड तोड़ने की प्रतीक्षा मत करो बल्कि स्वयं उसे तोड़ने का प्रयास करो क्योंकि सफलता के लिए आपकी खुद से लड़ाई है।"

एक साहसी स्वतंत्रता सेनानी और एक निडर क्रांतिकारी चंद्रशेखर का जन्म 23 जुलाई1906 को भाबरा(मध्य प्रदेश)में हुआ था।इनके पिता का नाम पण्डित सीताराम तिवारी व माता का नाम जगरानी देवी था।चंद्रशेखर ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा भाबरा में प्राप्त की और उच्च शिक्षा के लिए इन्हें उत्तरप्रदेश के वाराणसी की संस्कृत पाठशाला में भेजा गया था

1921 में गांधी जी के असहयोग आंदोलन का आरम्भिक दौर था ,उस समय मात्र 14 वर्ष की आयु में बालक चंद्रशेखर ने इस आंदोलन में भाग लिया ,चंद्रशेखर गिरफ्तार कर लिए गए और इन्हें मजिस्ट्रेट के समक्ष उपस्थित किया गया ।चन्द्रशेखर से इनका नाम पूछा गया तो इन्होंने अपना नाम आजाद,पिता का नाम स्वतंत्रता और घर जेलखाना बताया।इन्हें अल्पायु के कारण कारागार का दंड न देकर 15 कोड़ों की सजा दी गयी।हर कोड़े की मार पर वन्दे मातरम व भारत माता की जय का उच्च उदघोष करते रहे। 1922 में गांधी जी द्वारा असहयोग आंदोलन स्थगित कर दिया गया इससे चंद्रशेखर आजाद बहुत आहत हुए।इसके बाद चन्द्र शेखर आजाद और अधिक आक्रामक और क्रांतिकारी आदर्श की ओर आकर्षित हुए इन्होंने किसी भी कीमत पर देश को आजादी दिलाने के लिए खुद को प्रतिबद्ध किया।

चंद्रशेखर आजाद ने अन्य क्रांतिकारियों के साथ मिलकर 'हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन का गठन किया ।इन्होंने 1926 में काकोरी ट्रेन डकैती व 1926 में ही वायसराय की ट्रेन को उड़ाने का प्रयास किया। लाजपत राय की मृत्यु का बदला लेने के लिए चन्द्र शेखर आजाद ने भगत सिंह के साथ मिलकर 1928 में लाहौर में अंग्रेज सहायक पुलिस अधीक्षक जॉन साण्डर्स की हत्या कर दी उसके बाद दिल्ली पहुँच कर असेम्बली बमकाण्ड को अंजाम दिया।जीवित रहते हुए ये अंग्रेज सरकार के लिए आतंक का पर्याय बने रहे।

27 फरवरी 1931 को अल्फ्रेड पार्क इलाहाबाद में ब्रिटिश पुलिस ने इन्हें घेर लिया था ,इन्होंने बहादुरी से मुकाबला किया लेकिन कोई दूसरा रास्ता न मिलने पर खुद को गोली मारकर एक आजाद आदमी के तौर पर मरने के संकल्प को पूरा कर आत्म बलिदान कर दिया।

भगत सिंह

भगत सिंह

(संक्षिप्त जीवन परिचय)

अनमोल कथन- "मेरा धर्म देश की सेवा करना है।"

भारत के महान स्वतंत्रता सेनानी भगत सिंह का जन्म 28 सितम्बर 1907 को पंजाब प्रान्त के लायलपुर जिला के बंगा गांव(वर्तमान में पाकिस्तान में) हुआ था।इनका पैतृक गांव खटकड़कलाँ है जो पंजाब (भारत)में है।इनके पिता जी का नाम सरदार किशन सिंह व माता जी का नाम विद्यावती कौर था।यह एक जाट सिख परिवार था।

अमृतसर में 13 अप्रैल 1919 को हुए जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड ने भगत सिंह की सोच पर गहरा प्रभाव डाला था।लाहौर के नेशनल कॉलेज की पढ़ाई छोड़कर भगत सिंह ने भारत की आजादी के लिए नौजवान भारत सभा की स्थापना की थी।

काकोरी काण्ड में रामप्रसाद बिस्मिल सहित 4 क्रांतिकारियों को फाँसी व 16 अन्य को कारावास की सजाओं से भगत सिंह इतने अधिक उद्विग्न हुए कि चंद्रशेखर आजाद के साथ हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएसन से जुड़ गए और उसे एक नया नाम दिया हिंदुस्तान सोसलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएसन।

17 सितम्बर 1928 को भगत सिंह राजगुरु व चंद्रशेखर के साथ मिलकर लाहौर में सहायक पुलिस अधीक्षक रहे अंग्रेज अधिकारी जे.पी.साण्डर्स को गोली मारकर हत्या कर दी।

फिर क्रांतिकारी बटुकेश्वर दत्त के साथ मिलकर भगत सिंह ने वर्तमान नई दिल्ली स्थित तत्कालीन ब्रिटिश भारत की असेम्बली के सभागार संसद भवन में 8 अप्रैल 1929 को अंग्रेज सरकार को जगाने के लिए बम और पर्चे फेंके।बम फेंकने के बाद वहीं दोनो ने अपनी गिरफ्तारी दे दी।

जेल में भगत सिंह करीब 2 साल रहे इस दौरान ये लेख लिखकर अपने क्रांतिकारी विचार व्यक्त करते रहे। 23 मार्च 1931 को शाम के समय करीब 7 बजकर 33 मिनट पर भगत सिंह व इनके दो साथियों सुखदेव व राजगुरु को फाँसी दे दी गयी।

इस तरह से सरदार भगत सिंह ने अपने दो साथियों के साथ हँसते-हँसते फाँसी के फंदे पर झूल गए और देश के लिए अपना जीवन बलिदान कर दिया।

रामप्रसाद बिस्मिल

संकलनकर्ता-अजय शिंह (सहायक अध्यापक), प्राथमिक विद्यालय गजोधरपुर, विकास क्षेत्र- सिधौली, जनपद-सीतापुर(उ०प्र०)

रामप्रसाद बिस्मिल

(संक्षिप्त जीवन परिचय)

अनमोल कथन-"मुझे विश्वास है कि मेरी आत्मा मातृभूमि तथा उसकी दीन संतति के लिए नए उत्साह और ओज के साथ काम करने के लिए फिर लौट आएगी।"

महान क्रांतिकारी रामप्रसाद बिस्मिल का जन्म 11 जून 1897 को उत्तरप्रदेश के शाहजहाँपुर जिले में हुआ था।इनके पिता का नाम मुरलीधर और माता का नाम मूलमती था।

जब रामप्रसाद 7 वर्ष के हुए तो पिता पण्डित मुरलीधर घर पर ही हिंदी अक्षरों का ज्ञान कराने लगे,उस समय उर्दू का भी बोलबाला था इसलिए हिंदी शिक्षा के साथ-साथ बालक को उर्दू पढ़ने के लिए एक मौलवी साहब के पास भेजा जाता था।

जब रामप्रसाद बिस्मिल 18 वर्ष के थे तब स्वाधीनता सेनानी भाई परमानंद को ब्रिटिश सरकार ने 'ग़दर षड्यंत्र'में शामिल होने के लिए फाँसी की सजा सुनाई जो बाद में आजीवन कारावास में तब्दील हो गयी।यह खबर पढ़कर रामप्रसाद बहुत विचलित हो गए। इसके बाद रामप्रसाद ने पढ़ाई छोड़ दी और सन 1916 में 19 वर्ष की अवस्था में क्रांतिकारी मार्ग में कदम रखा और ब्रिटिश साम्राज्य को समूल नष्ट करने की प्रतिज्ञा ली।

पण्डित गेंदा लाल के मार्गदर्शन में रामप्रसाद बिस्मिल ने 'मातृदेवी'के नाम से एक संगठन बनाया।

और फिर क्रांतिकारी गतिविधियाँ शुरू हो गयी उनमें प्रमुख है काकोरी डकैती काण्ड।

संगठन हेतु धन की आवश्यकता को पूर्ण करने हेतु राम प्रसाद बिस्मिल के नेतृत्व में सरकारी खजाना लूटने की योजना बनाई गयी।इनके नेतृत्व में कुल 10 लोगों (जिनमें अशफाक़ उल्ला ख़ाँ, राजेन्द्र लाहिड़ी,चंद्रशेखर आजाद आदि)ने लखनऊ के पास काकोरी स्टेशन पर ट्रेन रोककर 9 अगस्त 1925 को सरकारी खजाना लूट लिया।26 सितम्बर 1925 को बिस्मिल के साथ 40 से अधिक लोगों को काकोरी डकैती काण्ड में गिरफ्तार कर लिया गया।

रामप्रसाद बिस्मिल को अशफाक़ उल्ला खाँ ,राजेन्द्र लाहड़ी और रोशन सिंह के साथ फाँसी की सजा सुनाई गयी और 19 दिसम्बर 1927 को गोरखपुर जेल में फाँसी दे दी गयी।

इस तरह से रामप्रसाद बिस्मिल ने अपने तीन साथियों के साथ माँ भारती को आजाद कराने हेतु अपने प्राण न्योछावर कर दिया।

लाला लाजपत राय

लाला लाजपत राय

(संक्षिप्त जीवन परिचय)

अनमोल कथन"अतीत को देखते रहना व्यर्थ है जब तक उस अतीत पर गर्व करने योग्य भविष्य के निर्माण के लिए कार्य न किया जा सके।"

महान क्रांतिकारी लाला लाजपत राय का जन्म पंजाब प्रान्त के मोगा जिले में स्थित दुधिके गाँव में 28 जनवरी 1865 को एक जैन परिवार में हुआ था।इन्हें 'पंजाब केसरी' भी कहा जाता है।इनके पिता का नाम मुंशी राधा किशन आजाद और माता का नाम गुलाब देवी था।

बचपन से ही इनकी माँ ने इनको उच्च नैतिक मूल्यों की शिक्षा दी। लाला लाजपत राय ने वर्ष 1889 में वकालत की पढ़ाई के लिए लाहौर के सरकारी कॉलेज में दाखिला लिया।कॉलेज के दौरान ये लाला हंसराज,और पण्डित गुरुदत्त जैसे देशभक्तों के सम्पर्क में आए तीनो अच्छे दोस्त बन गए और स्वामी दयानंद सरस्वती द्वारा स्थापित आर्य समाज में शामिल हो गए।

इन्होंने कुछ समय हरियाणा के रोहतक और हिसार शहरों में वकालत की।ये भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में गरम दल के प्रमुख नेता थे।बाल गंगाधर तिलक और विपिन चंद्रपाल के साथ इस त्रिमूर्ति को लाल-बाल-पाल के नाम से जाना जाता था।

इन्ही तीनों नेताओं ने सबसे पहले भारत में पूर्ण स्वतंत्रता की माँग की थी बाद में समूचा देश इनके साथ हो गया।

30 अक्टूबर 1928 को इन्होंने लाहौर में साइमन कमीशन के विरुद्ध आयोजित एक विशाल प्रदर्शन में हिस्सा लिया जिसके दौरान हुए लाठी चार्ज में लाला लाजपत राय बुरी तरह से घायल हो गए।इस समय इन्होंने कहा-"मेरे शरीर पर पड़ी एक एक लाठी ब्रिटिश सरकार के ताबूत में एक एक कील का काम करेगी।" और हुआ भी वही 20 साल के अंदर ही ब्रिटिश साम्राज्य का सूर्य अस्त हो गया।

17 नवम्बर 1928 को इन्हीं चोटों की वजह से भारत के महान सपूत लाला लाजपत राय का देहांत हो गया।

बाल गंगाधर तिलक

बाल गंगाधर तिलक

(संक्षिप्त जीवन परिचय)

अनमोल कथन--"आपके विचार सही,लक्ष्य ईमानदार और प्रयास संवैधानिक हों तो मुझे पूर्ण विश्वास है कि आपकी सफलता निश्चित है।"

बाल गंगाधर तिलक का जन्म 23 जुलाई सन 1856 को महाराष्ट्र स्थित रत्नागिरि जिले के एक गाँव 'चिखली' में हुआ था।इनके पिता का नाम गंगाधर शास्त्री व माता का नाम पार्वती बाई था।

तिलक बचपन से ही प्रतिभाशाली थे और गणित इनका प्रिय विषय था।आधुनिक शिक्षा प्राप्त करने वाले पहली पीढ़ी के भारतीय युवाओं में से एक तिलक भी थे।जब बालक तिलक महज 10 साल के थे तब इनके पिता जी का स्थानांतरण रत्नागिरि से पुणे हो गया। इस तबादले से इनके जीवन में भी बहुत परिवर्तन आया।इनका दाखिला पुणे के ऐंग्लोवर्नाकुलर स्कूल में हुआ और इन्हें उस समय के कुछ जाने-माने शिक्षकों से शिक्षा प्राप्त हुई। पुणे आने के तुरंत बाद इनकी माँ का देहांत हो गया। और तिलक जब 16 साल के थे तब इनके पिता जी भी चल बसे। तिलक जब मैट्रिकुलेशन में पढ़ रहे थे उसी समय इनका विवाह 10 वर्षीय कन्या सत्यभामा से करा दिया गया। 1877 में तिलक ने बी.ए. की परीक्षा गणित विषय में प्रथम श्रेणी के साथ उत्तीर्ण की और फिर इसके बाद पढ़ाई जारी रखते हुए एल.एल.बी.की डिग्री भी प्राप्त किया। बाल गंगाधर तिलक ने अपने सहयोगियों के साथ मिलकर 'डेक्कन एजुकेशन सोसाइटी' की स्थापना की और इसके पश्चात 2 साप्ताहिक समाचार पत्र 'केसरी' और 'मराठा' का प्रकाशन शुरू किया।केसरी मराठी भाषा में व मराठा अंग्रेजी भाषा में प्रकाशित होता था। जल्द ही दोनों साप्ताहिक पत्र बहुत लोक प्रिय हो गए। इसके माध्यम से तिलक ने हर एक भारतीय से अपने हक के लिए लड़ने का आह्वान किया। तिलक अपने लेखों में तीव्र और प्रभावशाली भाषा का प्रयोग करते थे जिससे पाठक जोश और देश भक्ति की भावना से ओत प्रोत हो जाए। धीर-धीरे ये लोगों के बीच में सर्वमान्य होते चले गए जिससे इन्हें 'लोकमान्य 'की उपाधि मिली।एक आंदोलनकारी और शिक्षक के साथ-साथ तिलक एक महान समाज सुधारक भी थे।इन्होंने बाल विवाह जैसी कुरीतियों का विरोध किया और विधवा पुनर्विवाह का समर्थन किया।।

सन 1897 में अंग्रेज सरकार ने तिलक के भड़काऊ लेखों के माध्यम से जनता को उकसाने,कानून को तोड़ने और शांति व्यवस्था भंग करने का आरोप लगाया और इन्हें डेढ़ साल की सश्रम कारावास की सजा हुई।सजा काटने के बाद सन 1898 में रिहा हुए और स्वदेशी आंदोलन को शुरू किया। सन 1906 में अंग्रेज सरकार ने तिलक को विद्रोह के आरोप में गिरफ्तार किया सुनवाई के पश्चात 6 साल की सजा हुई और इन्हें मांडले (बर्मा) जेल ले जाया गया। जेल में इन्होंने अपना अधिकतम समय पठन व लेखन में बिताया। बाल गंगाधर तिलक ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'गीता रहष्य' इसी दौरान लिखी।सजा काटने के बाद तिलक 8 जून 1914 को जेल से रिहा हुए। फिर अपने साथियों के साथ मिलकर तिलक ने 'होमरूल लीग'की स्थापना की जिसका उद्देश्य स्वराज था।इनका प्रसिद्ध नारा था-"स्वराज हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है और हम इसे लेकर रहेंगे।" भारत का यह महान सपूत 1 अगस्त 1920 को परलोक सिधार गया।

संकलनकर्ता-अजय शिंह (सहायक अध्यापक), प्राथमिक विद्यालय गजोधरपुर, विकास क्षेत्र- सिधौली, जनपद-सीतापुर(उ०प्र०)

रानी लक्ष्मी बाई

रानी लक्ष्मी बाई

(संक्षिप्त जीवन परिचय)

अनमोल कथन-"मै झांसी की रानी लक्ष्मीबाई प्रतिज्ञा करती हूँ जब तक मेरे शरीर में रक्त है मैं पूरी निष्ठा से अपनी मातृभूमि की सेवा करूंगी।"

रानी लक्ष्मीबाई का जन्म वाराणसी जिले में 19 नवंबर 1828 को एक मराठी ब्राह्मण परिवार में हुआ था।इनके बचपन का नाम मणिकर्णिका था परन्तु परिवार वाले इन्हें स्नेह से 'मनु' कहकर पुकारते थे। इनके पिता का नाम 'मोरोपंत ताम्बे' था और माता का नाम भागीरथी सापरे था। जब लक्ष्मीबाई मात्र 4 वर्ष की थी तभी इनकी माता का स्वर्गवास हो गया ।इनके पिता मराठा बाजीराव की सेवा में थे ।माँ के निधन के बाद घर में 'मनु' की देखभाल के लिए कोई नहीं था।मनु के पिता मनु को अपने साथ बाजीराव के दरबार में ले गए, वहाँ मनु के स्वभाव ने सबका मन मोह लिया और लोग इसे प्यार से छबीली कहने लगे। शास्त्रों की शिक्षा के साथ-साथ मनु को शस्त्रों की शिक्षा भी दी गयी ।सन 1842 में मनु का विवाह झांसी के राजा गंगाधर राव निम्बालकर के साथ हुआ और इस प्रकार ये झांसी की रानी बन गयी साथ ही इनका नाम बदलकर लक्ष्मीबाई कर दिया गया। सन 1851 में रानी लक्ष्मीबाई और गंगाधरराव को पुत्ररत्न की प्राप्ति हुई परन्तु चार महीने की आयु में उसकी मृत्यु हो गयी।उधर गंगाधर राव का स्वास्थ्य बिगड़ता जा रहा था।स्वास्थ्य बहुत अधिक बिगड़ जाने पर उन्हें दत्तकपुत्र गोद लेने की सलाह दी गयी उन्होंने वैसा ही किया और पुत्र को गोद लेने के बाद 21 नवंबर 1853 को गंगाधर राव परलोक सिधार गए इनके दत्तक पुत्र का नाम 'दामोदर राव' रखा गया। ब्रिटिश इण्डिया के गवर्नर जनरल डलहौजी की राज्य हड़प नीति के अंतर्गत अंग्रेजों ने झांसी राज्य का विलय कर लिया।झांसी राज्य का खजाना जब्त कर लिया साथ ही अंग्रेजों ने लक्ष्मीबाई को झांसी का किला छोड़ने को कहा जिसके बाद लक्ष्मीबाई को रानी महल में जाना पड़ा।7 मार्च 1854 को झांसी पर अंग्रेजों ने अधिकार कर लिया ।रानी लक्ष्मीबाई ने हिम्मत नहीं हारी और हर हाल में झांसी की रक्षा करने का निश्चय किया। अंग्रेजों के खिलाफ रानी लक्ष्मीबाई की जंग में कई और अपदस्थ और अंग्रेजी हड़प नीति के शिकार राजाओं जैसे बेगम हजरत महल,जीनत महल,अंतिम मुगल सम्राट बहादुर शाह,वानपुर के राजा मर्दन सिंह और तात्याटोपे आदि सभी महारानी के इस कार्य में सहयोग देने का प्रयत्न करने लगे। सन 1858 माह जनवरी में अंग्रेजों की सेना ने झांसी की ओर बढ़ना शुरू कर दिया और मार्च में शहर को घेर लिया।लगभग दो हफ्तों के संघर्ष के बाद अंग्रेजों ने शहर पर कब्जा कर लिया पर रानी लक्ष्मीबाई अपने पुत्र दामोदरराव के साथ अंग्रेजों की सेना से बचकर भाग निकली।झांसी से भागकर तात्या टोपे से जा मिली। तात्या टोपे और लक्ष्मीबाई की संयुक्त सेना ने ग्वालियर के विद्रोही सैनिकों की मदद से ग्वालियर के एक किले पर कब्जा कर लिया ।रानी लक्ष्मी बाई ने अंग्रेजों की सेना से कड़ा मुकाबला किया परन्तु 18 जून 1858 को ग्वालियर के पास कोटा की सराय में ब्रिटिश सेना से लड़ते-लड़ते वीरगति को प्राप्त हो गयी।

झलकारी बाई

संकलनकर्ता-अजय शिंह (सहायक अध्यापक), प्राथमिक विद्यालय गजोधरपुर, विकास क्षेत्र- सिधौली, जनपद-सीतापुर(उ०प्र०)

झलकारी बाई

(संक्षिप्त जीवनी)

अपना यश कीर्ति लिए,
जब आहुति देती है नारी।
तब -तब पैदा होती है,
इस धरती पर झलकारी।

झलकारी बाई का जन्म झांसी के पास भोजला गाँव में 22 नवम्बर 1830 को एक निर्धन कोली परिवार में हुआ था ।इनके पिता का नाम सदोवर सिंह कोली और माता का नाम जमुना बाई था।

झलकारी बचपन से ही साहसी और दृढ़ प्रतिज्ञ बालिका थी ।बचपन से ही झलकारी घर के काम के अलावा पशुओं की देखभाल और जंगल से लकड़ी इकट्ठा करने का काम भी किया करती थी।

इनका विवाह झांसी की सेना में सिपाही रहे पूरन कोली नामक युवक के साथ हुआ ।पूरे गाँव वालों ने झलकारीबाई के विवाह में भरपूर सहयोग दिया।विवाह के पश्चात पूरन के साथ झांसी आ गयी ।झांसी की रानी लक्ष्मीबाई की नियमित सेना में ये महिला शाखा दुर्गादल की सेनापति थी ।यह लक्ष्मीबाई की हमशक्ल भी थी।इस कारण शत्रु को धोखा देने के लिए ये रानी के वेश में भी युद्ध करती थी।जब ब्रिटिश सेना के जनरल ह्यूग रोज ने 1857 के विद्रोह के दौरान एक बड़ी सेना के साथ झांसी पर हमला किया था और झांसी के किले को घेर लिया तब झलकारीबाई ने एक योजना के अनुसार रानी लक्ष्मीबाई का भेष बनाकर किले के सामने के गेट पर सेना की एक टुकड़ी के साथ अंग्रेजी सेना का सामना किया ताकि दुश्मन इनके साथ लड़ाई करते रहे और दूसरी तरफ से रानी लक्ष्मी बाई किले से सुरक्षित भाग सकें।

सब कुछ योजना के अनुसार चल रहा था ।रानी लक्ष्मी बाई किले से सुरक्षित बाहर निकल गयी और ब्रिटिश सेना देखती ही रह गयी ।इसके बाद झलकारी बाई ने ब्रिटिश सेना का डटकर मुकाबला किया।झलकारी बाई ने अंग्रेजी सेना को युद्ध मे उलझाए रखा।हालांकि एक मुखबिर ने झलकारी बाई को पहचान लिया और झलकारी बाई की पहचान को उजागर करने की कोशिश की तभी झलकारी बाई ने उसे बंदूक से गोली मार दी ताकि रानी लक्ष्मी बाई का सच सामने न आ सके।

आखिरकार भीषण युद्ध के बाद जनरल रोज और उनकी सेना ने इन्हें पकड़ लिया और झलकारी बाई को भारी सुरक्षा के साथ एक तंबू में कैद किया था।हालांकि एक मौका देखते ही झलकारी बाई रात में कैद से भाग निकली ।अगले दिन जनरल ह्यूगरोज ने किले में भयंकर हमला किया उन्हें फिर झलकारी बाई से भिड़ना पड़ा ।एक लंबी लड़ाई में इनका पति वीरगति को प्राप्त हुआ जो एक कैनन शॉट में मारे गए थे ।जल्द ही एक तोप के गोले से 4 अप्रैल 1858 को झलकारी बाई वीरगति को प्राप्त हुई ।

मंगल पाण्डेय

मंगल पाण्डेय

(संक्षिप्त जीवन परिचय)

अनमोल कथन- "जब आप अपने देश की रक्षा करते हैं तो धर्म की रक्षा स्वयं हो जाती है।"

मंगल पाण्डेय भारत के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के अग्रदूत थे।इनका जन्म 30 जनवरी 1831 को संयुक्त प्रान्त के बलिया जिले के नगवा गाँव में हुआ था।इनके पिता का नाम दिवाकर पाण्डेय तथा माता का नाम अभय रानी था ।सामान्य ब्राह्मण परिवार में जन्म लेने के कारण युवावस्था में इन्हें रोजी-रोटी की मजबूरी में अंग्रेजों की फौज में नौकरी करने पर मजबूर कर दिया।

मंगल पाण्डेय सन 1849 में 22 साल की उम्र में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कम्पनी की सेना में शामिल हुए।मंगल पाण्डेय बैरकपुर की सैनिक छावनी में 34 वीं बंगाल नेटिव इन्फैंट्री की पैदल सेना में एक सिपाही थे।

जब कम्पनी की सेना की बंगाल इकाई में 'एनफील्ड पी.53' राइफल में नई कारतूसों को बंदूक में डालने से पहले मुँह से खोलना पड़ता था और भारतीय सैनिकों के बीच ऐसी खबर फैलाई गयी कि इन कारतूसों को बंदूक को बनाने में गाय तथा सुअर की चर्बी का प्रयोग किया जाता है।इनके मन में ये बात घर कर गयी कि अंग्रेज हिंदुस्तानियों का धर्म भ्रष्ट करने पर अमादा है क्योंकि यह हिन्दू और मुसलमानों दोनो के लिए नापाक था।

भारतीय सैनिकों के साथ होने वाले भेदभाव से पहले ही असंतोष था और नई कारतूसों से सम्बन्धित अफवाह ने आग में घी का कार्य किया।

9 फरवरी 1857 को जब नया कारतूस देशी पैदल सेना को बांटा गया तब मंगल पाण्डेय ने उसे लेने से इनकार कर दिया और 29 मार्च 1857 को मंगल पाण्डेय ने अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह का बिगुल बजा दिया।आक्रमण करने से पहले मंगल पाण्डेय ने अपने अन्य साथियों से समर्थन का आह्वान भी किया था पर डर के कारण जब किसी ने भी उनका साथ नहीं दिया तो इन्होंने अपनी ही राइफल से उस अंग्रेज अधिकारी मेजर ह्यूसन को मौत के घाट उतार दिया जो इनकी वर्दी उतारने और राइफल छीनने को आगे आया था ।इसके बाद मंगल पाण्डेय ने एक और अंग्रेज अधिकारी लेफ्टिनेंट बॉब को मौत के घाट उतार दिया जिसके बाद मंगल पाण्डेय को अंग्रेज सिपाहियों ने पकड़ लिया। इन पर कोर्ट मार्शल द्वारा मुकदमा चलाकर 6 अप्रैल को फाँसी की सजा सुनाई गयी।लेकिन ब्रिटिश सरकार ने मंगल पाण्डेय को निर्धारित तिथि से 10 दिन पूर्व ही 8 अप्रैल सन 1857 को फाँसी पर लटका दिया गया। इस प्रकार से देश के इस महान स्वतंत्रता सेनानी ने देश की स्वतंत्रता के लिए अपने को बलिदान कर स्वतंत्रता की रणभेरी बजा दी।

अशफाक उल्ला ख़ाँ

अशफाक़ उल्ला ख़ाँ

(संक्षिप्त जीवन परिचय)

कस ली है कमर अब तो,कुछ करके दिखाएंगे,
आजाद ही हो लेंगे या सिर ही कटा देंगे।

अशफाक़ उल्ला ख़ाँ का जन्म 22अक्टूबर 1900 को उत्तरप्रदेश के शाहजहाँपुर में हुआ था।इनके पिता का नाम मोहम्मद शफीक उल्ला ख़ाँ व माता का नाम मजहरुन्निशां बेगम था।ये अपने माता-पिता की छः संतानों में सबसे छोटे थे।

अशफाक़ उल्ला ख़ाँ के पिता पुलिस विभाग में कार्यरत थे।जिस समय महात्मा गांधी ने असहयोग आंदोलन का नेतृत्व किया था उस समय अशफाक़ उल्ला ख़ाँ एक स्कूल छात्र थे लेकिन इस आंदोलन का अशफाक़ पर काफी प्रभाव पड़ा जिसने इन्हें स्वतंत्रता सेनानी बनने के लिए प्रेरित किया।

चौरी-चौरा की घटना के बाद महात्मा गांधी ने असहयोग आंदोलन को स्थगित कर भारत के युवाओं को निराशाजनक स्थिति में छोड़ दिया।अशफाक़ उल्ला ख़ाँ उनमें से एक थे।अशफाक़ उल्ला ख़ाँ जल्द से जल्द भारत को स्वतंत्र कराने की ठान ली और ये क्रांतिकारियों से जुड़ गए।

8 अगस्त 1925 को शाहजहाँपुर में क्रांतिकारियों द्वारा एक बैठक आयोजित की गयी थी जिसमें इन लोगों ने ट्रेन से ले जाए जा रहे हथियार को खरीदने के बजाए उस सरकारी खजाने को लूटने का फैसला किया।इस प्रकार 9 अगस्त 1925 को रामप्रसाद बिस्मिल ,अशफाक़ उल्ला ख़ाँ ,राजेन्द्र लाहिड़ी ,ठाकुर रोशन सिंह,शचीन्द्र बख्शी ,चन्द्र शेखर आजाद आदि क्रांतिकारियों ने काकोरी स्टेशन पर सरकारी धन ले जाने वाली ट्रेन में लूटपाट की थी।इस घटना को इतिहास में 'काकोरी ट्रेन डकैती' के रूप में जाना जाता है।

इस लूटपाट के कारण रामप्रसाद बिस्मिल को 26 सितम्बर 1925 को सुबह पुलिस द्वारा गिरफ्तार कर लिया गया था।अशफाक़ उल्ला अभी भी फरार थे।वह बिहार से बनारस के लिए चले गए और वहाँ जाकर इन्होंने इंजीनियरिंग कम्पनी में काम करना शुरू कर दिया।इन्होंने 10 महीने तक वहाँ काम किया।

अशफाक़ उल्ला ख़ाँ ने अपने पठान मित्रों में से एक पर भरोसा किया जिसने उनकी मदद करने का नाटक किया था और बदले में उसने अशफाक़ उल्ला को पुलिस को सौंप दिया।अशफाक़ उल्ला ख़ाँ को फैजाबाद की जेल में बंद कर दिया गया।काकोरी ट्रेन डकैती मामले में राम प्रसाद बिस्मिल,अशफाक़ उल्ला ख़ाँ, राजेन्द्र लाहिड़ी और ठाकुर रोशन को मौत की सजा दी गयी जबकि अन्य लोगों को आजीवन कारावास की सजा सुनायी गयी।

अशफाक़ उल्ला ख़ाँ को 19 दिसम्बर 1927 को फाँसी दे दी गयी।
इस तरह से भारत का यह सपूत देश की आजादी के लिए बलिदान हो गया।